P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-VI February-2015
E: ISSN NO.: 2349-980X

पर्यावरणीय शिक्षाः वर्तमान युग में इसकी आवश्यकता एवं महत्व

सुषमा कमल
शोधार्थी,
बी0एड0 विभाग,
डी0एस0एन0 कॉलेज,
उन्नाव

विपिन कुमार
सहायक प्राध्यापक,
बी0एड0 विभाग,
डी0एस0एन0 कॉलेज,
उन्नाव

सारांश

पर्यावरण एक व्यापक संप्रत्यय है। मनुष्य जिस प्राकृतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं राजनैतिक परिस्थितियों में रहता है, वह सब उसका पर्यावरण हाता है। पर्यावरणीय शिक्षा वह शिक्षा है, जिसके द्वारा बच्चों, युवको और प्रौढ़ो को प्राकृतिक संसाधनो के दोहन और प्राकृतिक प्रदूषण के कारणों तथा उसके दुष्परिणामों से परिचित कराया जाता है एंव साथ ही उन्हें प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण व पर्यावरणीय प्रदूषण के रोकथाम की विधियाँ बतायी जाती है।

वर्तमान सदी जहाँ एक तरफ वैज्ञानिक व तकनीकी क्रान्ति की सदी है, वही दूसरी तरफ यह पर्यावरण को बढ़ते प्रदूषणों से बचाने व पर्यावरण सन्तुलन कायम रखने की भी सदी हैं। यदि समय रहते इस समस्या पर पर्याप्त व ठोस कार्यवाही नहीं की गयी, तो आने वाले कुछ वर्षो में सम्पूर्ण मानव सभ्यता विनाश के कगार पर खड़ी होगी और हम सभी उसके जवाबदेही होगें।

मुख्य शब्द : पर्यावरणोय शिक्षा, आवश्यकता एवं महत्व, पर्यावरण सन्तुलन

परिचय

पर्यावरण के प्रति जन जागरण करना एक महत्वपूर्ण कार्य है। आज भारतीय विश्वविद्यालयों की जिम्मेदारी केवल शिक्षण ही नही, बल्कि अनुसंधान एवं प्रसार सेवा भी है। नवम्बर 1991 में सुप्रीम कोर्ट के फैसले के अनुसार प्रत्येक विश्वविद्यालय और महाविद्यालय की जिम्मदारी है कि पर्यावरण को उच्च शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर एक अनिवार्य विषय के रूप में स्वीकृति प्रदान की जाये।

पर्यावरण शिक्षा वस्तुतः विश्व समुदाय को पर्यावरण सम्बन्धी दी जाने वाली वह शिक्षा है, जिससे वे समस्याओं से अवगत होकर उनका हल खोज सकें, तथा प्रकृति के मध्य अपना सामंजस्य स्थापित कर सकेगें।

''बूंद–बूंद पानी तो तरसे।
बिन वृक्षों के मेघ न बरसें।।''

यह एक ज्वंलत प्रश्न है कि पर्यावरणीय शिक्षा क्यों दी जाये? क्या पूर्ववर्ती शिक्षा में पर्यावरण सम्मिलित नहीं था? या उसकी आवश्यकता नहीं थी? वास्तव में पृथक से पर्यावरणीय शिक्षा का दौर विगत 35 वर्षो से ही प्रारम्भ हुआ। अलग स पर्यावरणीय शिक्षा देने का विचार 5 जून से 16 जून 1972 में स्टाकहोम में हुये मानव पर्यावरण कान्फ्रेंस से हुआ। मानव तकनीकी विकास एवं पर्यावरण में अन्तः सम्बन्धों से जो परिस्थितिकी चक्र बनाता है, वह सम्पूर्ण क्रियाकलापों और विकास को नियंत्रित करता है।

अर्न्तराष्ट्रीय कान्फ्रेंस मानव पर्यावरण जून (1972) में जब पर्यावरण संरक्षण रखरखाव तथा सुधार के लिये राष्ट्र स्तरीय प्रयासों की बात कही गयी थी, तब 3 वर्ष बाद बेलग्रेड में (अक्टूबर 1975) में आयोजित अर्न्तराष्ट्रीय संगोष्ठी में निर्णय लिया गया कि विश्व के सभी देशों के लिये समान तथा व्यापक रूप से पर्यावरणोय शिक्षा के ऐसे वस्तुनिष्ठ उद्देश्य स्वीकार किये जाने चाहिये, जो अत्यन्त व्यवहारिक हो और समूची पर्यावरणीय समस्या को आत्मसात कर सकें।

पर्यावरणीय परिवर्तनों पर किये गये कुछ अर्न्तराष्ट्रीय प्रयास निम्नलिखित हैं :–

1988

वातावरणीय पर आई0पी0सी0सी0 की स्थापना अमेरिका को प्रदूषण पर घेरा गया।

1990

आई0पी0सी0सी0 की पहली रिपोर्ट प्राकशित व बीती एक सदी में पृथ्वी का ओसत तापमान 0.50 बढ़ा।

1992

रियोजिडेनेरियो में हुआ वातावरण परिवर्तन सम्मेलन, 154 देशों के सहमति पत्र पर हस्ताक्षर 2000 तक प्रदूषण स्तर को 1990 के स्तर तक लाने का लक्ष्य घोषित किया।

1996

वातावरण परिवर्तन पर दूसरा सम्मेलन, प्रदूषण कम करने पर अमेरिका की पहली बार सहमति।

1998

व्यूनसआसर्य में क्योटो संधि की समीक्षा

फरवरी 2007

फरवरी 2007 में जारी आई0पी0सी0सी0 रिपोर्ट में जलवायु परिवर्तन की भयावह तस्वीर पेश की। भूतपूर्व अमेरिकी उपराष्ट्रपति अलगोर व आई0पी0सी0सी0 के अध्यक्ष डा0 राजेन्द्र पचौरी संयुक्त रूप से नोबेल शान्ति पुरस्कार से सम्मानित।

दिसम्बर 2007

दिसम्बर 15 तक वाली द्विस समूह स्थित नुसादुआ में संयुक्त राष्ट्र के नेतृत्व में सबसे बड़ा सम्मेलन सम्पन्न, अमेरिका के रवैये में बदलाव 2050 से पहले ग्रीन हाउस के उत्सर्जन में कटौती कर 2000 के स्तर पर लाने पर सहमति।

निष्कष

भारतीय संविधान प्रत्येक नागरिक को एक स्वच्छ व सम्पूर्ण पर्यावरण तथा स्वच्छ जलवायु प्राप्त करने का अधिकार प्रदान करता है। भारत के सभी विद्यालयों मे 5 जून का दिन पर्यावरण दिवस के रूप में मनाया जाता है। अतः वर्तमान सदी जहॉ एक तरफ वैज्ञानिक व तकनीकी क्रान्ति की सदी ह, वही दूसरी तरफ यह पर्यावरण को बढ़ते प्रदूषणों से बचाने व पर्यावरण सन्तुलन कायम रखने की भी सदी हैं।

यदि समय रहते इस समस्या पर पर्याप्त व ठोस कार्यवाही नहीं की गयी, तो आने वाले कुछ वर्षा में सम्पूर्ण मानव सभ्यता विनाश के कगार पर खड़ी होगी और हम सभी उसके जवाबदेही होगें।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. डी.प्रकाशम (1988) ''ए स्टडी ऑफ टीचर इफेक्टिवेश एण्ड एफेक्शन ऑफ स्कूल आर्गेनाइजेशनल क्लाइमेंट एण्ड टीचिंग कम्पोटेन्सी,पील–एच.डी.एजूकेशन रविशंकर यूनिवर्सिटी।
2. Jaffrelot, Christophe (2005). Ambedkar and Untouchability: Fighting the Indian Caste System. New York: ColumbiaUniversity Press. p. 2. ISBN 0-231-13602-1.
3. S. Wang, Z. Su & S.P. Pevine (2001), National Occupational health service policies & programmes for workers in small scale industries in china AIHAJ 61 pp. 842-849
4. Jaffrelot, Christophe (2005). Ambedkar and Untouchability: Fighting the Indian Caste System. New York: ColumbiaUniversity Press. p. 2. ISBN 0-231-13602-1.
5. Jaffrelot, Christophe (2005) (in English). Dr Ambedkar and Untouchability: Analysing and Fighting Caste. London:\C. Hurst & Co. Publishers. p. 4. ISBN 1850654492.